व्यवसाय साहित्य

अपना व्यवसाय/अपना रोजगार

अवसर

चुनिए

इतिहास, वास्तुकला, संगीत एवं नृत्य में रोजगार

कैरियर स्टडी सेण्टर

व्यवसाय मार्ग निर्देशन इकाई

जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली

इतिहास, वास्तुकला, संगीत एवं नृत्य में रोजगार

संकलित एवं प्रकाशितः

कैरियर स्टडी सेण्टर
व्यवसाय मार्ग निर्देशन इकाई
जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली

सर्वाधिकार सुरक्षित
जिला सेवायोजन अधिकारी
रायबरेली।

प्रथम संस्करण
फरवरी 2008

प्रकाशक :
जिला सेवायोजन अधिकारी
रायबरेली।
दूरभाष : 0535–2701365
Website : *www.raebareli.nic.in/employment*

मुद्रक :
अग्रवाल आफसेट
470, डाक तार कालोनी के पीछे,
कानपुर रोड, रायबरेली।

भगवती प्रसाद सागर
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
सेवायोजन विभाग

राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

कक्ष सं० 2/3, प्रथम तल,
बापू भवन, उत्तर प्रदेश सचिवालय
दूरभाष (कार्या) : 0522 2235302
(आवास): 0522-2507159
सी०एच०: 4803
लखनऊ : दिनांक 26-03-2008

संदेश

भू-मण्डलीकरण के इस युग में रोजगार एवं प्रशिक्षण की दिशा व दृष्टि में द्रुतगामी परिवर्तन हो रहा है, जिस कारण सूचनापरक साहित्य की अति आवश्यकता है। सेवायोजन निदेशालय लखनऊ, काउन्सिलिंग की दिशा में कैरियर साहित्य के प्रकाशनों पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर रहा है। आशा है कि छात्र-छात्राओं की अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं को यह साहित्य पूरा करेंगे। निःसन्देह यह अति गम्भीर एवं सार्थक प्रयास है।

इस प्रकाशन से सम्बद्ध अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

शुभ-कामनाओं सहित।

रायबरेली

(भगवती प्रसाद सागर)

कपिल देव
आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव
श्रम विभाग

अर्द्ध.शा.प.सं. ....

बापू भवन, उत्तर प्रदेश शासन,
लखनऊ-- 226001
(का.) : 2238682 सी.एच. : 4587
फैक्स : 2237831

दिनांक : ....

संदेश

मुझे यह अवगत कराया गया है कि सेवायोजन निदेशालय लखनऊ, काउन्सलिंग की दिशा में **''कैरियर साहित्य''** के प्रकाशन पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर रहा है। भूमण्डलीकरण के युग में रोजगार एवं प्रशिक्षण की दिशा व दृष्टि में द्रुतगामी परिवर्तन हो रहा है, जिस कारण सूचनापरक साहित्य की अति आवश्यकता है। सम्भवतः छात्र-छात्राओं की अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं को ये साहित्य पूरा करेंगे। निःसंदेह यह अति गंभीर एवं सार्थक प्रयास है।

इस प्रकाशन से सम्बद्ध अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं सहित ।

(कपिल देव)
प्रमुख सचिव

देवेन्द्र नाथ दुबे
आई0ए0एस0

जिलाधिकारी, रायबरेली
कार्यालय : 2202302
आवास : 2703301
2703401

सन्देश

आज के बदलते परिवेश में तकनीकी एवं व्यावसायिक योग्यता वर्तमान समय की आवश्यकता है। इसके लिये छात्र-छात्राओं को अपनी अभिरूचि के अनुसार शिक्षण व प्रशिक्षण के नये अवसरों तथा पाठ्यक्रमों की सम्यक् जानकारी का होना अति आवश्यक है जिससे वे अपने लिये उपयुक्त कैरियर को अपना सकें।

जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली की व्यवसाय मार्गदर्शन इकाई के कैरियर स्टडी सेण्टर ने इतिहास, वास्तुकला, संगीत एवं नृत्य में रोजगार नामक इस पुस्तिका में इन क्षेत्रों में उपलब्ध प्रशिक्षण और रोजगार के अवसरों का संकलन प्रस्तुत किया है।

मैं इस पुस्तिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह प्रकाशन अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल सिद्ध होगा।

देवेन्द्र नाथ दुबे

प्रभा शंकर शुक्ल
जिला सेवायोजन अधिकारी

जिला सेवायोजन कार्यालय
रायबरेली 229001
दूरभाष : 0535–2701365

आमुख

सेवायोजन कार्यालयों में व्यवसाय मार्गदर्शन इकाई की स्थापना अभ्यर्थियों को उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, रूचि–अभिरूचि, पारिवारिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर व्यावसायिक मन्त्रणा प्रदान करने हेतु की गयी है। इस कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु इन केन्द्रों को कैरियर स्टडी सेण्टर के रूप में विकसित किया जा रहा है। जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली की व्यवसाय मार्गदर्शन इकाई द्वारा 'अवसर कलश' एवं 'सम्भावना' पुस्तिकाओं की श्रृंखला में 'इतिहास, वास्तु कला संगीत एवं नृत्य में रोजगार' नामक वर्तमान पुस्तिका प्रस्तुत है।

इतिहास हमारी प्रगति का अभिलेख है। इसे प्रारम्भिक कक्षाओं से ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है इतिहास अध्ययन के महत्व, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रोजगार प्राप्ति हेतु इसकी उपादेयता एवं इसके विभिन्न क्षेत्र में शिक्षा/ प्रशिक्षण से संबंधित सूचनाओं का संकलन इस पुस्तिका में करने का प्रयास किया गया है।

'कला – कला के लिये है' अथवा 'कला जीवन के लिये है?' जब हम संगीत अथवा नृत्य को जीवन–यापन हेतु अपनाने की सोचते हैं, यह प्रश्न स्वतः ही उठ खड़ा होता है। वर्तमान प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में कुशल कलाकारों के लिये ये क्षेत्र अत्यन्त आकर्षक एवं धनोपार्जक हैं। भारत में संगीत एवं नृत्य की एक समृद्ध विरासत है। देश के अधिकांश विद्यालयों में संगीत तथा नृत्य को एक प्रमुख विषय के रूप में पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।इन क्षेत्रों में उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधाओं का समावेश इस पुस्तिका में करने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तिका की संकल्पना, विषयवस्तु चयन एवं आकल्पन में कार्यालय के मेरे सहयोगी सहायक सेवायोजन अधिकारी श्री आनन्द स्वरूप पाण्डेय का विशेष सहयोग रहा है। मैं श्री देवेन्द्र नाथ दुबे, जिलाधिकारी, रायबरेली का उनके द्वारा दिये गये अमूल्य संदेश के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। पुस्तिका के संबंध में श्री दिलीप कुमार, अपर निदेशक सेवायोजन, श्री डी0 प्रसाद, वरिष्ठ शोध अधिकारी तथा श्री डी0

के0 वर्मा, क्षेत्रीय सेवायोजन अधिकारी, निदेशालय द्वारा दिये गये सुझाओं हेतु मैं उनका हार्दिक आभारी हूॅ। कार्यालय के अन्य कर्मचारी – श्री अजय कुमार, अनुदेशक भाषा, श्री रामसेवक, एवं श्री राम गुलाम भारतीय, वरिष्ठ सहायक जिन्होने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस प्रकाशन हेतु सहयोग किया है, उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूॅ साथ ही पुस्तिका के मुद्रक के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूॅ, जिन्होने अत्यन्त परिश्रम से इस पुस्तिका का आकर्षक मुद्रण किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तिका बेरोजगार युवक–युवतियों, छात्र–छात्राओं एवं अभिभावकों के लये सही अर्थों में मार्गदर्शन प्रदान करेगी। यद्यपि पुस्तिका के प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गयी है और अद्यतन तथा सही–सही सूचनाओं के समावेश का प्रयास किया गया है फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई है तो पाठक गण कृपया क्षमा करेंगें। रचनात्मक सुझावों का हम सहर्ष स्वागत करेंगें।

प्रभा शंकर शुक्ल

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
1.	इतिहास के क्षेत्र में रोजगार	
2.	वास्तु कला के क्षेत्र में रोजगार	
3.	संगीत के क्षेत्र में रोजगार	
4.	नृत्य के क्षेत्र में रोजगार	

इतिहास, स्थापत्य एवं पुरातत्व में रोजगार

अपनी सभ्यता की कहानी जानने की उत्सुकता भला किसे नहीं रहती। हम सभी अपने अतीत को जानने के लिए स्वभावतः ही उत्सुक रहते हैं। कारण यह है कि मानव समाज निरन्तर परिवर्तन के दौर से गुजरता रहा। इसलिए हम अपने अतीत को समझना चाहते हैं, ताकि यह जान सकें कि वर्तमान स्थिति तक हम कैसे पहुँचे? हम जानना चाहते हैं कि हमारे पूर्वजों के रहन–सहन, खान–पान, सोच–विचार, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यतायें इत्यादि में कब–कब और कैसे–कैसे परिवर्तन आयें? अलग–अलग क्षेत्रों में इन परिवर्तनों की अवधि क्या थी? हम जानना चाहते हैं कि अतीत में हमारे पूर्वजों को किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था और वे किन–किन उपायों द्वारा उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते गये? हम जानना चाहते हैं कि हमारी सभ्यता कैसी–कैसी सीढ़ियों का सहारा लेकर इतनी अधिक विकसित हुई है? हम जानना चाहते हैं कि हम अपनी प्राचीन सभ्यताओं से क्या–क्या सीख सकते हैं? एक तरह से हम अतीत और वर्तमान का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं।

यह कोई बहुत पुरानी बात नही है जब समझा जाता था कि इतिहास मात्र 'बिगुलों और नगाड़ों' अर्थात् युद्धों की कहानी है। कहा जाता था कि शासक युद्ध बनाते हैं और युद्ध शासक – और दोनों मिलकर बनाते हैं इतिहास। समय के साथ इतिहासकारों के दृष्टिकोण का विकास हुआ, उनका परिपेक्ष्य और विस्तृत हुआ और इतिहास राजनीति के सीमित दायरे से निकल कर एक अधिक व्यापक विषय बन गया है। अब धारणा स्थापित हुई कि यदि इतिहास समय की धारा में मानव की गाथा है या मानव को समझने से संबंधित अध्ययन है तो उसे मनुष्य को उसकी सम्पूर्णता में देखना होगा। इस

प्रकार सामाजिक इतिहास मानव इतिहास का महत्वपूर्ण अंग हो जाता है।

इतिहास शब्द दो प्रकार से प्रयुक्त होता है। इसका अर्थ है 'घटनाओं का अभिलेख' अथवा स्वयं घटनाएं। इतिहासविद् पुरातन घटनाओं के संरक्षक हैं। वे पहले की सभ्यताओं अथवा शासन की परम्पराओं तथा घटनाओं की व्याख्या करते हैं। वे इस प्रकार अन्य विषयों जैसे – दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, भाषा तथा भौतिक विज्ञान को आधार प्रदान करते हैं। इतिहास का प्रयोग प्रायः समस्त क्षेत्रों में होता है। संवैधानिक इतिहास का अध्ययन संवैधानिक विधि के लिये अपरिहार्य है। अर्थशास्त्र की प्रगति के लिए आर्थिक इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। चिकित्सा विज्ञान के इतिहास का अध्ययन वर्तमान चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। समाचार पत्र, पत्रिकाएं तथा साहित्य, किसी घटनाक्रम के विश्लेषण में इतिहासविदों की सहायता करते है।

इतिहासकारों का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि इतिहास। प्रत्येक सभ्यता में कुछ व्यक्ति ऐसे हुए हैं जिन्होंने समाज के घटनाक्रम को लेख, पुस्तक, चित्र अथवा चिन्हों के माध्यम से लिपिबद्ध किया है। वर्तमान युग में ऐतिहासिक ज्ञान वैज्ञानिक विधियों से संरक्षित किया जा रहा है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा इसकी क्रमबद्ध शिक्षा भी प्रदान की जा रही है।

इतिहास प्रायः सभी विद्यालयों, कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। वर्तमान में इतिहास अध्ययन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। इसमें archaeology, numasmatics, epigraphy, archives, continental history, cultural history आदि सम्मिलित हैं। कोई एक व्यक्ति इन सभी विधाओं में कुशल नहीं हो सकता है अतः वह किसी एक क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त करता है। स्नातक स्तर तक इतिहास के

छात्रों को विषय की सामान्य जानकारी तथा विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान कराया जाता है तथा एम0 ए0 स्तर पर छात्र किसी विशेषज्ञता का चयन करता है और तदनुसार अध्ययन करता है। भारत में प्रत्येक वर्ष लगभग 20000 छात्र स्नातकोत्तर स्तर पर इतिहास की परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं।

शिक्षण/प्रशिक्षण सुविधाएं :–

स्नातकोत्तर शिक्षा

वे छात्र जिन्होंने बी0 ए0 स्तर पर इतिहास विषय लिया होता है स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश लेते है। यह दो वर्ष की अवधि का होता है। इस स्तर पर इतिहास का गहन अध्ययन किया जाता है। स्नातोकत्तर स्तर पर विश्वविद्यालयों में प्राचीन भारतीय इतिहास, Epigraphy, Arcaeology, Museology, Medieval History आदि विषय उपलब्ध हैं। ये इस प्रकार हैं:–

1. प्राचीन भारतीय इतिहास
2. भारतीय इतिहास (मध्य युगीन)
3. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व
4. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति
5. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
6. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं एशियन अध्ययन
7. प्राचीन भारतीय इतिहास तथा Epigraphy
8. इतिहास एवं पुरातत्व
10. मध्ययुगीन एवं आधुनिक इतिहास
11. पाश्चात्य इतिहास
12. इस्लामिक अध्ययन
13. भारत और दक्षिण पूर्व एशिया का इतिहास

पी0 एच0 डी0 उपाधि :–

स्नातकोत्तर उपाधि धारक छात्र, जिन्होंने उच्च द्वितीय अथवा प्रथम श्रेणी प्राप्त की हो, शोध कार्य हेतु प्रवेश लेते है। यह सुविधा प्रायः सभी विश्व विद्यालयों में उपलब्ध है। छात्र को किसी वरिष्ठ प्राध्यापक के निर्देशन में कार्य करने हेतु एक विषय आवंटित किया जाता है। शेष विषय के चयन के उपरान्त शोध की रूप रेखा तैयार कर तदनुसार विषय पर उपलब्ध विभिन्न साहित्यों, सन्दर्भ ग्रन्थों, व्यक्तिगत साक्षात्कार आदि के माध्यम से शोध निर्देशक के निर्देशन में शोध प्रबन्ध तैयार कर पी0 एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत किया जाता है।

विशेषज्ञ प्रशिक्षण :–

इतिहास के क्षेत्र में कुछ विशेष प्रशिक्षण निम्नवत् हैं :–

(1) डिप्लोमा इन आर्कियोलोजी :–

भारत सरकार द्वारा भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण विभाग के अन्तर्गत स्कूल आफ आर्कियोलोजी संचालित किया जाता है जो आर्कियोलोजी को व्यवसाय के रूप में अपनाने के इच्छुक छात्रों को पुरात्व के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह स्नातकोत्तर डिप्लोमा एक वर्ष की अवधि का होता है। इसमें प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को उच्च द्वितीय अथवा प्रथम श्रेणी में एम0 ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। प्रायः यह प्रशिक्षण प्रतिवर्ष अक्टूबर से प्रारम्भ होता है। इसका पूर्ण विवरण अलग से सारणी में दिया गया है।

(2) ट्रेनिंग इन आरकाइव्स कीपिंग (अभिलेख संरक्षण) प्रशिक्षण :–

राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत सरकार द्वारा अभिलेख संरक्षण का एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स संचालित किया जाता है। इसमें प्रवेश हेतु उच्च द्वितीय श्रेणी अथवा प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। यह प्रशिक्षण प्रायः नवम्बर में प्रारम्भ होता है और इसमें 15 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।इनमें कुछ अभ्यर्थी सरकार द्वारा नामित किये जाते है।

संस्थान द्वारा अभिलेख संरक्षण में एक वर्षीय पत्राचार कोर्स भी संचालित किया जाता है। यह प्रशिक्षण राज्य/ केन्द्र सरकार के ऐसे कर्मचारियों के लिये होता है जिन्होने बी0ए0 अथवा बी0एस0सी0 की परीक्षा पास की हो।

(3) अन्य डिप्लोमा प्रशिक्षण :–

उपरोक्त प्रशिक्षणों के अतिरिक्त Museology, Archaeology तथा इतिहास में डिप्लोमा तथा प्रमाण पत्र प्रशिक्षण इलाहाबाद विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, मद्रास यूनिवर्सिटी, मदुराई कामराज यूनिवर्सिटी, कर्नाटक यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, महाराजा सायाजी राव यूनिवर्सिटी बडौदा, कोलकाता यूनिवर्सिटी, प्राच्य निकेतन भोपाल आदि संस्थानों द्वारा प्रदान किये जाते है। ये प्रायः एक से दो वर्ष की अवधि के होते हैं।

विभिन्न संस्थानों द्वारा संचालित डिप्लोमा प्रशिक्षण

Name of Institute	Course	Duration	Educational Qualification	Remarks
Scchool of Archaeology, Archaeological Survey of India, Janpath New Delhi- 110001	Post Graduate Diploma course in Archaeology	One Year	IInd class master's degree with papers in Ancient or Medieval Indian History or in Archaeology or Geology with knowledge of Pleistocenegeology or Anthropology and Stoneage Archaeology. Qualification are relaxable in the case of candidates who are already in archaeological services or have done archaeological research or field work. Non-graduates candidates are not admitted.	The course commences from October. There are 15 seats in the school Applications are invited in the month of July/ August. Selection is made by a Board before which candidates are required to appear for interview.
National Archives of India, Janpath, New Delhi- 110001	Diploma course in Archives Keeping	One Year	Second class Master's degree in History of a recognised University or equivalent with an optional paper in Modern Indian History/ Post 1600 period.	There are 15 seats in Archives keeping course. The course begins in the month of November. Applications are invited in the month of

				August/September. Application should be addressed to the Director of Archives or Institute of Archival Training, 35, Ferozshah Marg, New Delhi-110001. The training is free of charge. No hostel facility is provided.
	Corresponda nce Course in the Science of Archives Keeping	One Year	Graduate in Arts/ Science	The course generally commences from April/ May. Lessons are sent to students at regular interval. The practical training is imparted at following centres: 1-Andhra Pradesh State Archives, Hyderabad 2- Orissa State Archives, Bhubaneshwar. 3- Rajasthan Stae Archives, Bikaner.

				4- U.P.State Archives, Lucknow. The medium of instruction is English/ HindiThe training is imparted free of cost but candidates have to bear postal charges for their response sheets

रोजगार के अवसर

1. इतिहास अध्यापन :

इतिहास के स्नातक एवं परास्नातक अध्येताओं के लिये अध्यापन एक प्रतिष्ठित व्यवसाय है। विभिन्न स्तर पर इतिहास अध्यापकों के लिये योग्यतायें भिन्न–भिन्न हैं ये इस प्रकार हैं :–

अ– हायर सेकेण्ड्री अध्यापक (NCO: 2320.10) :

उच्च द्वितीय श्रेणी/ प्रथम श्रेणी में इतिहास विषय के साथ स्नातक/ स्नातकोत्तर तथा बी0एड0 या समकक्ष उपाधि धारक प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक/ स्नातकोत्तर शिक्षक पदों के योग्य होते हैं। स्नातकोत्तर शिक्षक पदों पर 7 से 10 वर्षों के अनुभव के उपरान्त प्रधानाचार्य पद पर प्रोन्नति भी हो सकती है। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित केन्द्रीय/ नवोदय विद्यालय, सेना शिक्षा कोर तथा राज्य सरकार के विद्यालयों में इन पदों पर चयन हेतु रिक्तियां समय–समय पर समाचार पत्रों/ रोजगार समाचार में प्रकाशित की जाती हैं। प्रशिक्षित अध्यापकों को रू0 5500–9000 तथा स्नातकोत्तर शिक्षकों को रू0 6500–10500 का वेतनमान दिया जाता है।

ब– महाविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों में शिक्षक (NCO: 2310.10) :

ऐसे अभ्यर्थी जिनके पास स्नातकोत्तर स्तर पर इतिहास विषय रहा हो तथा उन्होने यह परीक्षा उच्च द्वितीय श्रेणी/ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की हो और नेट परीक्षा उत्तीर्ण की हो अथवा एम0ए0 के अतिरिक्त पी0एच0डी0/ एम0फिल0/ डी0लिट0 की उपाधि प्राप्त की हो महाविद्यालयों

तथा विश्वविद्यालय में शिक्षक हेतु पात्र होते हैं। एक व्याख्याता को प्रति सप्ताह लगभग 17 –18 व्याख्यान लेना होता है। महाविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ शिक्षक स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ाते हैं तथा शोध छात्रों का निर्देशन भी करते हैं। महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय के शिक्षकों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निम्न प्रकार से वेतनमान अनुमन्य हैं :

प्रवक्ता	8000–13500
रीडर	
प्रोफेसर	

2. प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से :

संघ एवं राज्यों के लोक सेवा आयोगों द्वारा ली जाने वाली विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में इतिहास एक मुख्य विषय है। यह प्रारम्भिक तथा मुख्य दोनों परीक्षाओं में एक वैकल्पिक विषय के रूप में उपलब्ध है। संघ तथा राज्यों की सिविल सेवाओं हेतु परीक्षाएं प्रायः प्रत्येक वर्ष में एक बार आयोजित की जाती हैं। सिविल सेवा के अतिरिक्त अन्य विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी इतिहास वैकल्पिक विषय के रूप में उपलब्ध है

3. विशेषज्ञता क्षेत्रों में रोजगार :

ऐसे इतिहास के विद्यार्थी जो अध्यापन अथवा सिविल सेवाओं में नही जा पाते हैं अथवा इच्छुक नही हैं को इतिहास के अन्य विशेषज्ञता के क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। कतिपय ऐसे व्यवसायों का विवरण निम्नवत् हैः–

अ– पुरातत्वविद् (Archaeologist) NCO : 2442.80

इतिहास का ज्ञान केवल लिखित वृतान्त पर आधारित है। अब यह मान लिया गया है कि जब से किसी सभ्यता के लिखित प्रमाण मिलते हैं, तभी से ऐतिहासिक युग

आरम्भ होता है। वैसे मनुष्य द्वारा लिखित इतिहास की आयु पाँच हजार वर्ष से अधिक नही है, परन्तु सच पूछिये तो हमारे देश में सर्वप्रथम लिखित वृत्तान्त अशोक के शिलालेख या स्तम्भ लेख (270 ई0 पूर्व) हैं। यदि चाणक्य के अर्थशास्त्र (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व), सिकन्दर के आक्रमण के समय का यूनानी वृत्तान्त (326 ई0 पू0) और बौद्ध साहित्य (छठी शताब्दी ई0 पू0) को भी शामिल कर लिया जाये, तब भी हमारा ऐतिहासिक युग छठी शताब्दी ईसा पूर्व अर्थात् आज से लगभग 2600 वर्ष पहले जाकर रूक जाता है, लेकिन हमारे सभ्यता की कहानी 20 लाख वर्ष पुरानी है क्योंकि इसका आरम्भ इस धरती पर मानव के प्रादुर्भाव के साथ हो जाता है अर्थात आज से कोई 20 लाख वर्ष पूर्व पाषण युग का आरम्भ हुआ था। उस समय मनुष्य तराशे हुए पत्थर का प्रयोग करता था अर्थात् आरम्भिक काल में मानव औजार तथा हथियार बनाने में पत्थर से काम लेते थे। इसलिए ऐतिहासिक युग से पहले की सभ्यता, जिसे हम 'प्रागैतिहासिक युगीन सभ्यता' कहते हैं, जानने के लिए हम ज्ञान–विज्ञान की जिस शाखा का सहारा लेते हैं, उसे 'पुरातत्व' कहा जाता है और इस शाखा के विद्वानों को 'पुरातत्ववेत्ता' या 'पुराविद्' या 'पुरातत्वविद्' या 'खुदाईकार' कहा जाता है। सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता क्राफोर्ड (Crawford, O.G.S.) के अनुसार ज्ञान–विज्ञान की वह शाखा जिसके अर्न्तगत अतीत के गर्भ में विलुप्त मानव सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन किया जाता है, उसे पुरातत्व कहते हैं अर्थात् पुरातत्व मानव समाज के अतीत की वह व्याख्या है जो उससे सम्बद्ध पुरावशेषों के आधार पर की जाती है। पुरातत्व को अंग्रेजी में Archaeology कहते हैं। यह दो यूनानी शब्दों Archaios (Arche) और Logos के मेल से बना है Archaios का अर्थ है– प्राचीन अथवा प्रारम्भिक और Logos का अर्थ है– सम्भाषण या ज्ञान–वार्ता। इतिहासकारों में ही कुछ पुराविद् भी होते हैं जो धरती के अन्दर मिट्टी की परतों में छिपी हुई हमारी सांस्कृतिक धरोहरों एवं अवशेषों को बाहर निकालते हैं।

जो भी हो, इतना तो सच है कि खुदाई से प्राप्त जानकारियाँ जितनी रोमांचक हैं, उतनी ही जादुई भी। शायद इसीलिए कुछ लोग आज भी यही समझते हैं कि खुदाईकार एक रहस्यमय व्यक्ति होता है जो जंगलों, टीलों, खण्डहरों इत्यादि में गड़े हुए खजानों की खोज करता है। किन्तु यह सच नहीं है, क्योंकि खजानों और प्रदर्शन योग्य वस्तुओं की खोज करने वालों का सम्बन्ध इतिहास के निर्माण के बजाय पैसा कमाने से होता है। वे पुरातात्विक स्थलों का महत्व समझे बिना मूल्यवान वस्तुओं को पाने के लिए खुदाई करते हैं। वे अन्य महत्वपूर्ण अवशेषों पर ध्यान नहीं देते लेकिन पुराविद् न केवल पुराने अवशेषों को प्राप्त करता है बल्कि उन अवशेषों द्वारा कही गयी कहानी पर भी ध्यान देता है। वह खुदाई से प्राप्त अवशेषों की पहचान, वर्गीकरण, विश्लेषण और तुलना पर बहुत अधिक समय लगाता है। एक पुराविद् की निगाह मे खुदाई से प्राप्त वस्तु का जितना महत्व है, उतना ही अर्थपूर्ण वह स्थल भी है जहां से वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। इस शताब्दी के बहुचर्चित एवं बहुप्रशंसित पुराविद् सर रार्बट एरिक मार्टिमल व्हीलर ने ठीक ही कहा है कि, 'हम चीजें नहीं, मनुष्य खोदते हैं, पदार्थ नहीं, संस्कृति का उत्खनन करते हैं। हमारे लिए जमीन से निकला वह खजाना भी बेकार है जो किसी इतिहास की रचना न कर सके और वह सड़ी–गली लाश भी बहुत कीमती है जो बीते युग की पूरी कहानी बताती है'।

सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता चाइल्ड (Childe) के मतानुसार पुरातत्व के अर्न्तगत भौतिक जगत में घटित उन सभी परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है जिनका कर्ता मनुष्य रहा है। उन्होनें मानव द्वारा प्राप्त अवशेषों को आर्टीफैक्ट (Artifacts) की संज्ञा दी है और इन्हें दो श्रेणियों में विभक्त किया है– एक चल अवशेष (relics) दूसरा अचल अवशेष (monuments)। मिट्‌टी के बर्तन, पत्थर के औजार, मूर्तियाँ, सिक्के इत्यादि चल अवशेष की श्रेणी में आते हैं और मकान, पूजा गृह, कब्र–समाधि, किले, नहर इत्यादि अचल अवशेष की श्रेणी में आते हैं। इन्हीं

प्राचीन अवशेषों के आधार पर पुरातत्ववेत्ता लुप्त अथवा अज्ञात सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विवरण प्रस्तुत करता है।

वास्तव में पुरातत्वविदों की कुदालियाँ धरती की पर्तो से नित्य नई सभ्यतायें निकालने में व्यस्त हैं। प्रति वर्ष वे कुछ नये पन्ने इतिहास के ग्रन्थों में जोड़ते चले जाते हैं। प्रागैतिहासिक युग की सभ्यताओं का अध्ययन हमारे लिए इसलिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उस आरम्भिक समय में भी मनुष्य ने आधुनिक मशीनों को छोड़ कर अन्य सभी मूल–भूत खोजें कर ली थीं। मिट्टी की विभिन्न पर्ते पृथ्वी के इतिहास के अलग–अलग कालों की सूचक होती है, इसलिए किसी स्थल की मिट्टी पुराविदों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे भू–स्तरण के साथ–साथ अवशेषों के पुरातात्विक या सांस्कृतिक स्तरण का भी अध्ययन करते हैं। धरती की पर्तो का अध्ययन करने वाली विज्ञान की इस शाखा को 'स्तर विज्ञान' कहते है। इस कार्य में भूगर्भीय और पुरातात्विक दोनों प्रकार की पर्तें सहायक सिद्ध होती हैं। मनुष्य के इतिहास की अनेकानेक गुत्थियाँ धरती की पर्तों मे छिपी हैं जिनका पता लगाना अब एक विज्ञान हो गया है। इसलिए हम कह सकते हैं कि पुरातत्व अनुसंधान एक अत्यन्त रोमांचकारी विज्ञान है।

पुराविदों की खोज और खुदाई का एक मात्र उद्देश्य मनुष्य के कौतुहल पूर्ण अतीत को समझना है। इसका महत्व इसलिए है कि इससे पुराने जमाने के लोगों के रहन–सहन, रीति–रिवाज इत्यादि की जानकारी मिलती है। पुरातत्ववेत्ता कई तरह से इनके निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं। प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का पूर्ण चित्रण प्रस्तुत करना पुरातत्ववेत्ताओं का आदर्श हैं।

ब– लेख विज्ञानी (Epigraphist) NCO : 2443.30

प्राचीन स्मारकों, मन्दिर की दीवालों, पाषाण खण्डों, चट्टानों, ताम्रपत्रों आदि पर अंकित प्राचीन लेखों के अध्ययन

का कार्य लेख विज्ञानी द्वारा किया जाता है। अध्ययन के आधार पर वह स्थान, व्यक्ति तथा देश काल का ऐतिहासिक मूल्यांकन करता है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विस्मृत इतिहास, शासकों, उनके काल की सभ्यता, सामाजिक/धार्मिक/आर्थिक मान्यताओं का मूल्यांकन करता है। विभिन्न ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का भ्रमण कर पत्थरों, ताम्रपत्रों, मन्दिर की दीवालों, भित्तिचित्रों, मुहरों तथा सिक्कों का अध्ययन कर उनके आरेख तैयार करता है। अपने अध्ययन के माध्यम से उन लेखों को decode तथा decipher करता है एवं निष्कर्षों को प्रकाशित कर शोधार्थियों को उपलब्ध कराता है।

स– मुद्रा विज्ञानी (Numismatist) NCO : 2443.40

इनका कार्य प्राचीन सिक्कों का संग्रहण तथा उन पर अंकित लेखों, चित्रों, आरेखों तथा सूचनाओं के अध्ययन का कार्य करता है। दुर्लभ सिक्कों के एकत्रीकरण हेतु देशों का भ्रमण करता है तथा उन्हे उनके कालक्रम, संरचना एवं प्रयुक्त धातुओं के आधार पर क्रमबद्ध करता है। इन मुद्राओं के अध्ययन के आधार पर उस काल के आर्थिक इतिहास की रूपरेखा निर्धारित कर अपने निष्कर्षों को प्रकाशित कराता है तथा उनके महत्व, विशेषताओं तथा इतिहास पर व्याख्यान देता है।

द– अभिलेख विज्ञानी (Archivist) NCO : 2431.10

प्रशासनिक एवं ऐतिहासिक महत्व के अभिलेखों, पाण्डुलिपियों आदि के संग्रहकर्ता तथा अभिरक्षणकर्ता को अभिलेख विज्ञानी कहते हैं। यह अभिलेखागार को स्थनान्तरित अभिलेखों को शोधार्थियों को उपलब्ध कराने हेतु उन्हे क्रमबद्ध करता है तथा उनकी सूची तैयार करता है। पुराने तथा नष्ट हो रहे अभिलेखों का संरक्षण एवं उनकी सुरक्षा के उपाय करता है।

य– संग्रहालय विज्ञानी (Museologist) NCO : 2431.20

संग्रहालय विज्ञान संग्रहालय से संबंधित विज्ञान है। इससे संग्रहालय के पेशेवर कर्मियों को संग्रहालय की आवश्यकताओं को पूरा करने और उसकी विभिन्न गतिविधियों के प्रबंधन में मदद मिलती है। इन गतिविधियों के अन्तर्गत संग्रहालय के लिये वस्तुएं जुटाने, उनका प्रलेखन करने और उनके बारे में अनुसंधान, संग्रहालय विज्ञान की शिक्षा, संग्रहालय में प्रदर्शनियों के आयोजन, संरक्षण और अनुरक्षण, संग्रहालय विपणन, संग्रहालय स्थापत्य, संग्रहालय प्रकाशन, संग्रहालय सुरक्षा एवं प्रशासन जैसे कार्य सम्मिलित हैं।

म्यूजियम शब्द की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा के 'म्यूजिओन' से हुई है, जिसका अर्थ है : कला और विज्ञान की संरक्षिका देवी म्यूसेज का मन्दिर। विश्व भर के संग्रहालयों को ज्ञान, अनुभव, किसी खास क्षेत्र या समुदाय की प्राचीन संस्कृति और धरोहर के संरक्षण का ऐसा केन्द्र माना जाता है जहां उसकी पहचान, उसके विकास और उसके प्रमाणों को मूल रूप में देखा जा सकता है।

संग्रहालय विज्ञान बड़ा विस्तृत और अत्यन्त पेशेवर विषय है। इस पाठ्यक्रम को करने के बाद आप संग्रहालय में संग्रहपाल (Curator), अनुरक्षक (Conservator), प्रशासनिक अधिकारी, सम्पर्क अधिकारी, शैक्षिक अधिकारी आदि के रूप में कार्य कर सकते हैं। इसके अलावा संग्रहालय विज्ञान में अध्यापन के अवसर भी उपलब्ध हैं। भारत में लगभग 700 संग्रहालय हैं। इनमें केन्द्र सरकार के संग्रहालयों से ले कर जिला स्तर के और ट्रस्टों और धार्मिक संस्थाओं के अधीन संग्रहालय सम्मिलित हैं। इनमें अपनी विशेषज्ञता के विषय के अनुरूप उम्मीदवारों के लिये रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं।

इतिहास से संबंधित इन विशेषज्ञों को केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा निजी क्षेत्रों में रोजगार के पर्याप्त अवसर

उपलब्ध है। यह उपयुक्त होगा कि कुछ ऐसे प्रमुख संस्थानों का भी उल्लेख किया जाय जिनमें इतिहासविदों के नियोजन के अवसर उपलब्ध हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India)
जनपथ, नई दिल्ली– 110001

इस संस्थान की स्थापना वर्ष 1961 में हुई थी। इसका कार्य पुरातन स्थलों की ऐतिहासिक खोज तथा उत्खनन, प्राचीन स्मारकों का रख रखाव एवं संरक्षण, पुरानी धरोहरों को संरक्षित घोषित करना तथा प्राचीन अभिलेखों एवं सिक्कों का अध्ययन और उत्खननों से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री का संग्रहालयों में प्रदर्शन है। इस संस्था के कार्यकलापों के संचालन हेतु पूरे देश को दस भागों में विभक्त किया गया है। इसकी विशेषज्ञ शाखायें उत्खनन, पूर्व इतिहास, एपीग्राफी, पुरातात्विक बाग, संग्रहालय, प्राचीन पूजा स्थलों के अध्ययन का कार्य करती हैं। प्रत्येक प्रशासनिक क्षेत्र अधीक्षण पुरातत्वविद् (Superintending Archaeologist) के निरीक्षण के अन्तर्गत कार्य सम्पादित करते हैं। सम्पूर्ण भारत में लगभग 5000 स्थल राष्ट्रीय धरोहर के रूप में घोषित किये गये हैं जिनकी देख–भाल तथा संरक्षण का कार्य इस संस्था द्वारा किया जाता है।

ऐसे अभ्यर्थी जिन्होने स्नातकोत्तर परीक्षा इतिहास, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व, इस्लामिक इतिहास एवं संस्कृति अथवा संस्कृत/पाली/अरबी/फारसी/द्राविडियन भाषाओं में उत्तीर्ण किया हो, उन्हे इस संगठन में सेवायोजन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं। स्नातक/परास्नातक परीक्षा के साथ पुरातत्व अथवा संग्रहालय विज्ञान अथवा अभिलेख संरक्षण में प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थियों हेतु भी इस संगठन में पद उपलब्ध हैं।

भारतीय इतिहास शोध संगठन (Indian Council of Historical Research), 35, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली 110001.

इस संगठन की गतिविधियां इतिहास एवं सम्बद्ध विषयों के विशेषज्ञों द्वारा संचालित की जाती हैं। इसमें चयन अ– प्रोन्नति द्वारा, ब–सीधी भर्ती द्वारा, स– प्रतिनियुक्ति (deputation), एवं द– अनुबन्ध द्वारा अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से होता है। रिक्तियां रोजगार समाचार तथा अन्य समाचार पत्रों के माध्यम से विज्ञापित की जाती हैं। विभिन्न अकादमिक पदों पर सीधी भर्ती हेतु आयु सीमा 18 से 45 वर्ष होती है।

राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India) :

विभिन्न स्थानों पर बिखरी ऐतिहासिक सामग्रियों के संरक्षण तथा उन्हे क्रमबद्ध रूप में शोधार्थियों को उपलब्ध कराने हेतु बड़ी संख्या में कार्मिकों की आवश्यकता होती है। भारतीय अभिलेखागार का मुख्यालय जनपथ नई दिल्ली में स्थित है। इसकी भारत के विभिन्न शहरों में शाखायें भी है जिनमें कोलकाता, भोपाल तथा जयपुर मुख्य है।

अन्य संस्थाएं :

राष्ट्रीय अभिलेखागार के अतिरिक्त देश के विभिन्न राज्यों में भी राज्य अभिलेखागार स्थित हैं जिनमें राज्य से संबंधित ऐतिहासिक महत्व के अभिलेख संरक्षित किये जाते हैं। राज्यों के विभिन्न विभागों से संबंधित अभिलेख एक निर्धारित समयावधि के उपरान्त अभिलेखागारों को स्थनान्तरित किये जाते हैं।

पर्यटन मन्त्रालय, विदेश मन्त्रालय की सांस्कृतिक इकाई, रक्षा मन्त्रालय में सेना के इतिहास लेखन तथा सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के अधीन सेंसर बोर्ड, फिल्म्स डिवीजन

तथा प्रसार भारती में भी इतिहास के छात्रो को रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

इतिहास के क्षेत्र में स्वतः रोजगार :

स्वरोजगार के क्षेत्र में इतिहास के विद्यार्थियों को स्वतः रोजगार के अत्यन्त सीमित अवसर उपलब्ध हैं। उन्हे शहरी क्षेत्रों में निजी कोचिंग संस्थानों में अध्यापन का कार्य मिल सकता है जो विभिन्न परीक्षाओं तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराते हैं। प्रत्येक वर्ष विदेश से आने वाले लगभग 10 लाख पर्यटक देश के विभिन्न ऐतिहासिक/ पुरातात्विक महत्व के स्थलों का भ्रमण करते हैं। वे इन धरोहरों के संबंध में तथ्यात्मक जानकारी पाना चाहते हैं। भारत सरकार का पर्यटन मंत्रालय 20 से 35 वर्ष के आयुवर्ग के इतिहास के स्नातक/ परास्नातक अभ्यर्थियों का टूरिस्ट गाइड के रूप में पंजीयन करता है। उन्हे तीन महीने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इसके लिये अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त एक विदेशी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है।

टूरिस्ट गाइड के अतिरिक्त इतिहास संबंधी पुस्तकों का लेखन भी इतिहास के विद्यार्थियों के लिये स्वतः नियोजन का अच्छा क्षेत्र हो सकता है।

संगीत क्षेत्र में शिक्षा एवं रोजगार

संगीत एक ऐसी कला है जो मनुष्य के हृदय और उसकी आत्मा को आह्लाद और खुशी से भर देती है। इसमें गायन, नृत्य और वाद्ययंत्रों के वादन शामिल हैं। गायन को सुर या स्वर–संगीत की संज्ञा दी गई है जबकि वाद्ययंत्रों के वादन को वाद्य संगीत के रूप में जाना जाता है। शुद्ध शास्त्रीय संगीत से लेकर अर्द्धशास्त्रीय और सुगम संगीत की अनेक शाखाएं हैं।

भारत में दो प्रकार के संगीत की प्रणालियाँ विद्यमान हैं। वे हैं – दक्षिण भारतीय संगीत, जो कर्नाटक संगीत प्रणाली के रूप में भी जाना जाता है और उत्तर भारतीय संगीत जिसका नाम भारतीय संगीत प्रणाली भी है। दोनों ही प्रणालियों में तकनीकी विविधतायें हैं। वाद्ययंत्र संगीत के अन्तर्गत आम तौर पर जो वाद्य यंत्र आते हैं, वे हैं– सितार, सरोद, सारंगी, संतूर, वीणा, तबला और पखावज आदि। ये एकल रूप से बजाने के साथ–साथ स्वर–संगीत के साथ लय या पार्श्व–संगीत प्रदान करने के लिए भी बजाए जाते हैं।

नृत्य के अनेक रूप भारत के विभिन्न राज्यों में लोकप्रिय हैं। उत्तर भारत में शास्त्रीय नृत्य की प्रमुख शैली कत्थक है जबकि दक्षिणी राज्यों में भरतनाट्यम, कुचिपुणी, ओडिसी इत्यादि की जड़ें जमी हुयी हैं। मणिपुरी जैसी अन्य महत्वपूर्ण नृत्य शैलियाँ भी हैं।

हममें से बहुत से लोग संगीत की साधना बिना किसी आर्थिक लाभ के शगल के रूप में या व्यक्तिगत आनन्द पाने के लिए करते हैं, जबकि कुछ लोगों के लिए बाद में यह व्यवसाय बन जाता है। ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जहाँ संगीत की प्रतिभा को लाभप्रद रूप से नियोजित किया जा सकता है।

जैसे– संगीत सिखाना, फिल्मों का उत्पादन, थियेटरों, निजी प्रदर्शन करने वाले क्लबों, मनोरंजन करने वाले अन्य स्थानों, होटलों, वाणिज्यिक रिकॉडिंगों, प्रसारण, पुलिस और सेना में (वाद्ययंत्र वादन में) वाद्य सेवायें आदि में। टीवी और मल्टीचैनलों के आने से और देश के विभिन्न हिस्सों सहित विदेशों में भी संगीत उत्सवों के आयोजन में सरकार के समर्थन से संगीतज्ञों, नर्तकों और अन्य कलाकारों की मांग बहुत ज्यादा बढ़ गयी है। पश्चिमी प्रभाव के कारण पश्चिमी संगीत भी बहुत लोकप्रिय हुआ है, विशेषकर युवा वर्ग के बीच। परिणाम स्वरूप पॉप संगीत, जाज, रैप, ब्रेक डांस आदि भी भारत भूमि पर अपना प्रभाव डाल रहे हैं।

संगीत और नृत्य को परम्परागत तरीके से गुरू से सीखा जा सकता हैं। शिक्षा के लिए किसी औपचारिक शिक्षा की आवश्यमकता नहीं है किन्तु व्यक्ति के अन्दर मौलिक प्रवृत्ति होनी चाहिए। अन्ततः यह तो कलाकार की अपनी प्रवीणता और शैली ही है जो उसको पहचान और प्रसिद्ध तक पहुँचाती है।

अधिकांश संगीतज्ञ स्वतन्त्र या आकस्मिक कलाकार के रूप में हैं। वेतनभोगी कार्य सीमित हैं। शुरूआती वर्ष संघर्षों का होता है, यदि आप अपवाद स्वरूप अच्छे नहीं हैं। अर्जन करने का सबसे अच्छा तरीका है संगीत पढ़ना शुरू कर देना। यद्यपि किसी स्कूल या संस्था में पढ़ाने के लिए संगीत में डिग्री या डिप्लोमा होना जरूरी है। यह उनके लिए भी एक विकल्प है जो संगीत से प्यार तो करते हैं लेकिन चर्चा में आना नहीं चाहते। निजी ट्यूशन देना शिक्षकों के लिए अन्य अतिरिक्त लाभ हैं। अधिकांश लड़कियाँ संगीत, मुख्यतः नृत्य अपने घर पर ही सीखने को प्राथमिकता देती हैं।

हम ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जो बड़ा उत्तेजक दौर कहा जा सकता है और जिसमें संगीत की भूमिका बड़ी तेजी से बदल रही है संगीकार किसी दूर के म्यूजिक स्टैण्ड या

संगीत रचनाओं के पीछे छिपा कोई व्यक्ति नहीं है और न वह किसी सीडी, रिकार्ड या कैसेट से आने वाली आवाज भर है। आज के संगीतकार विशाल जनसमुदाय में विभिन्न लोगों से अलग–अलग स्तरों पर संवाद स्थापित करने के कौशल में माहिर होते हैं। लोगों के संगीत संबंधी अनुभव उतने ही विविध हो सकते हैं जितने दुनिया में लोग हैं चूंकि दुनिया में कोई एक संगीत नहीं है, इस कारण संगीत के क्षेत्र काम करने वालों का कोई एक लक्ष्य नहीं होता। निष्पादन कलाओं (संगीत, नृत्य और नाटक) के कलाकारों में से संगीत सबसे अधिक प्रभावशाली है हर स्कूली शिक्षा पूरी करने वाले, स्नातक डिग्री हासिल करने वाले तथा अन्य कई लोग संगीत के कारोबार की ओर आकृष्ट होते हैं। कुछ लोग होते हैं जो रोजाना नौ से पाँच बजे की नौकरी की लीक से हटकर कुछ करना चाहते हैं।

आखिर संगीत में ऐसा क्या है जो कि भिन्न–भिन्न जातियों, वर्गों, सम्प्रदायों और राष्ट्रीयताओं वाले लोगों को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करता है। इस व्यवसाय का आकर्षण इस बात में है कि इसमें भरपूर रोमांस, ग्लैमर और उत्तेजना होती है। इधर उपग्रह टेलीवीजन, संगीत चैनलों और संगीत कार्यक्रमों के प्रयोजन में कम्पनियों की बढ़ती भूमिका ने संगीत को अचानक एक जबरदस्त व्यवसाय बना दिया है यह बात सच है कि टेलीविजन के परदे पर हमें गाने और साज बजाने वाले लोग ही दिखाई देते हैं, मगर गौर से देखने पर संगीत के कारोबार में और भी बहुत से लोग शामिल होते हैं।

कार्य क्षेत्र–

संगीत का क्षेत्र बड़ा व्यापक है और इसके अन्तर्गत गायन, संगीत रचना, ध्वन्यांकन, वीडियो निर्माण, प्रशासन, अध्यापन, आलोचन, पत्रकारिता और इन्हीं से सम्बन्धित अनेक अन्य कार्य शामिल हैं। संगीत निर्माण कम्पनियों में प्रबंधक, प्रचारक, संगीत रचनाकार, गीतकार, गायक, वाद्य संगीतकार,

डिस्को जॉकी, वीडियो निर्माता निर्देशक, कापीराइट ऐजेन्सियां और कई अन्य को रोजगार मिलता है। संगीत के कारोबार में अधिकतर लोगों के काम का समय निश्चित और नियमित होता है बहुत से लोगों का तो वाद्य यंत्रों या कलाकारों के साथ कोई वास्ता ही नहीं रहता।

विशेषतायें–

अगर आप संगीत के व्यवसाय में जाने के इच्छुक हैं तो नीचे कुछ खास गुण दिये गये हैं जो आप में होने चाहिए या आपको प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए आपको सृजनशील, मिलनसार, उदार हृदय, उत्साही, संगीत का जानकार होना चाहिए। इसके अलावा आप में आत्मविश्वास कड़ी मेहनत करने की क्षमता, लगन, अच्छा संप्रेषण कौशल, कम्प्यूटर की जानकारी और तनाव वाले माहौल में काम करने की क्षमता भी होनी चाहिए। इस कठिन और अत्यधिक स्पर्धा वाले व्यवसाय में अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए संगीत से सच्चे अर्थ में प्रेम होना जरूरी है मंच पर कला के प्रदर्शन या शास्त्रीय संगीत के अध्यापन के क्षेत्र में जाने के लिए व्यवसायिक योग्यता निश्चय ही बड़े काम आती है।

व्यवसाय और इससे सम्बन्धित कौशल

कलाकार–

शास्त्रीय संगीतकार (गायन या वादन) आम तौर पर संगीत महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयो से प्रशिक्षित या किसी जाने–माने 'गुरू' से संगीत विद्या प्राप्त होती है। पॉप संगीतकार और/या गायक औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो सकते हैं। अगर आम तौर पर ये खुद ही सीखे होते हैं। अगर आप संगीत के क्षेत्र में आने की गम्भीरता से सोच रहें है और आप ने पक्का मन बना लिया है तो कई महीनों या वर्षो तक

कम वेतन पर काम करने को तैयार रहिए तब कहीं आप अपनी प्रतिभा का उपयोग करके रोजी–रोटी कमा सकेगें। अधिकतर पॉप संगीतकार आम तौर पर अपने व्यवसायिक जीवन में तीन मुख्य चरणों को मान कर चलते हैं ये चरण हैं :– सीधे कार्यक्रम प्रस्तुत करना, अपने संगीत को रिकार्ड के रूप में निकालना और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीत की प्रस्तुति देना। अक्सर ये चरण इसी क्रम में आते हैं लेकिन बहुत से कलाकार पहले चरण से आगे की नहीं सोच पाते वे तो बिना पूरी तरह पेशेवर बने किसी कैबरे में या किसी टेलीवीजन कार्यक्रम निर्माण केन्द्र में गाने–बजाने मात्र से संतुष्ट होकर रह जाते हैं। कुछ ही कलाकार रिकार्ड बनाने के स्तर तक पहुँच पाते हैं यहाँ तक कि एकल प्रस्तुतियां देने वाले कलाकार भी अपनी प्रतिभा पर पूर्ण विश्वास के बावजूद संगीत के क्षेत्र में अकेले कुछ कर पाना बड़ा मुश्किल पाते हैं। शौकियां संगीतकारों को उन्हें मिलने वाले काम के अनुसार अपने आपको ढालना पड़ता है।

संगीत से सम्बन्धित इन क्षेत्रों में सफलता कई बातों के संयोग पर निर्भर रहती है इनमें आपसी तालमेल, भाग्य, सही समय पर सही स्थान पर पहुँचने की क्षमता, दृढ़ निश्चय, कड़ी मेहनत प्रमुख है लेकिन शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सफलता के लिए दृढ़ निश्चय और कड़ी मेहनत विशेष रूप से जरूरी है। पॉप कलाकार के लिए कलाकार के रूप में अपनी छवि बनाये रखना जरूरी है लेकिन कलाकारों में प्रतिभा, लगन, आत्मसंयम, टीम के रूप में कार्य करने की क्षमता, महत्वाकांक्षा, आवश्यक कौशल/प्रशिक्षण और आलोचना स्वीकार करने की क्षमता भी होनी चाहिए। शास्त्रीय संगीतकारों के लिए लिपिबद्ध संगीत को समझने और पढ़ने की क्षमता भी होनी चाहिए।

गीतकार/संगीतकार–

संगीकार के व्यवसाय में यह निश्चित नहीं होता कि किसी एक साल अच्छी आमदनी कर लेने के बाद अगले साल

भी वे अपनी कला से अच्छी आय अर्जित कर सकेगें। हो सकता है वे अगले साल मोटी रकम कमा लें और यह सम्भव है कि नाम मात्र की आमदनी हो इस व्यवसाय में हर बार एक नई शुरूआत होती है। किसी गीतकार का आकलन उसके पिछले गाने के आधार पर होता है ।

पॉप कलाकारों द्वारा बनाये गाये जाने वाले गीतों के हिट होने के लिए गीतों के छन्द, अन्तरे, टेक, अन्त और संगीत की उठती–गिरती स्वर लहरियों का ध्यान रखना आवश्यक है। पॉप संगीत के क्षेत्र में एकल प्रस्तुतियों के साथ–साथ अन्य कलाकारों के साथ वृन्द गान मंडली भी बनायी जा सकती है। गीतकारों को गीतों की रचना करते समय विषयवस्तु, माहौल श्रोताओं का ध्यान रखना जरूरी है। अगर संगीत रचना पहले से हो चुकी है तो आप उसी के आधार पर अपनी शुरूआत कर सकते हैं। गीतकार फिल्मों के लिए भी गीत लिख सकते हैं इसके अलावा टेलीविजन, रेडियो आदि पर प्रस्तुत किए जाने वाले संगीत और लोक संगीत के लिए भी गीत रचना की जा सकती है। जरूरत इस बात की है कि आप सम्बन्धित लोगों/संगठन से सम्पर्क बनाये रखें। व्यवसायिक घराने विज्ञापन कम्पनियों के जरिये उत्पादों के प्रचार के लिए जिंगल (प्रचार गीत) लिखवाते हैं। फिल्म/टेलीविजन कम्पनियों में गीत रचना के काम के लिए निर्देशक/निर्माता से सम्पर्क रखना चाहिए ।

चाहे पॉप संगीत हो, फिल्म संगीत हों या जिंगल हो, संगीत रचनाकार का काम बड़ा जटिल होता है। उनके लिए संगीत में डिग्री उपयोगी हो सकती है मगर बहुत से संगीतकार अपनी पारिवारिक पृष्ठ भूमि या फिल्मों में अपने सम्पर्को के आधार पर बिना डिग्री के ही अवसर पा जाते हैं।

मैनेजर/डिस्ट्रीब्यूटर–

संगीत के क्षेत्र में डिस्ट्रीब्यूटर या वितरक का काम प्रबन्धन से सम्बन्धित है उन्हें व्यवहार कुशल, अपनी बात प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करने में सक्षम, ईमानदार और कार्यकुशल होना चाहिए। हिसाब–किताब रखने के लिए गणित की जानकारी भी अपेक्षित होती है लेकिन सबसे ज्यादा जरूरी है संगीत उद्योग के बारे में उत्साह और लगन। नई संगीत प्रतिभाओं की खोज और उनका दिशा निर्देश करके बेहतरीन गाने रिकार्ड करवाना संगीत प्रबन्धन के क्षेत्र में एक अतिरिक्त दायित्व है।

संगीत का व्यापार तो आज बहुत बड़े कारोबार का रूप ले चुका है। विपणन की रणनीति बनाते समय कलाकारों के कपड़ों से लेकर सार्वजनिक स्थानों की उपस्थिति तक की तमाम बातों का ध्यान रखना पड़ता है और पहले से सारी तैयारियाँ करनी पड़ती हैं। वीडियो निर्माण, टेलीविजन विज्ञापन, रेडियो पर प्रसारण, रिकार्ड की पैकेजिंग और इसे रिलीज करने के समय जैसी/छोटी–बड़ी सभी बातों का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। इन्हीं सावधानियों से कोई नया रिकार्ड भरपूर लोकप्रियता प्राप्त करता है।

कलाकार प्रबन्धन/जन सम्पर्क–

कलाकारों के प्रबन्धन के अन्तर्गत कलाकारों के साथ व्यवसायिक अनुबंधन, नियोजन और संगठन सम्बन्धी कार्य आते हैं। कलाकार प्रबंधक के रूप में सफलता के लिए आवश्यक गुण अनुभव और प्रशिक्षण से प्राप्त किये जा सकते हैं। कोई प्रबन्धक तभी सफल कहा जा सकता है जब उसकी देखरेख में रह कर कलाकार सफलताएं प्राप्त कर रहा हो। क्या कोई मैनेजर अपने कलाकार को कामयाब बना सकता है या नहीं ये बहस बहुत लम्बी है। कलाकार और प्रबन्धक के बीच आदर्श सम्बन्ध तब माना जाता है जब कलाकार को अपने प्रबन्धक पर पूरा भरोसा हो और प्रबन्धक पर्दे के पीछे होने वाले तमाम कठिन और अरूचिकर कार्यो को ठीक से निपटा दे। दक्षता

और सूझ–बूझ इस कार्य के लिए बहुत जरूरी है वैसे भारत में आर्टिस्ट मैनेजर का व्यवसाय अभी नया–नया ही है। इस व्यवसाय में मैनेजर को रेडियो और टेलीविजन प्रोड्यूसरों के साथ निकट सम्पर्क रखना पड़ता है और कलाकार की प्रस्तुति के लिए समय की व्यवस्था करनी होती है। इस व्यवसाय में संगीत की जानकारी के साथ–साथ मीडिया की जानकारी और धैर्य भी बहुत जरूरी है।

प्रोड्यूसर (संगीत निर्माता)–

प्रोड्यूसर का काम स्टूडियो बुक करना, रिकार्डिगं उपकरणों की व्यवस्था करना, बजट सम्बन्धी इन्तजाम करना और रिकार्डिंग के लिए इन्जीनियरी सम्बन्धी व्यवस्था करना है। इसमें से अधिकतर कार्य अन्य व्यक्तियों द्वारा किए जाते हैं। स्टूडियों और उपकरण सुचारू रूप से कार्य करें इसके लिए प्रोड्यूसर परखे हुए और माहिर इन्जीनियरों तथा प्रतिष्ठित रिकार्ड कम्पनियों से ही काम लेते हैं। कभी–कभी प्रोड्यूसर, इन्जीनियर या कलाकार के रूप में पहले काम कर चुके लोग भी होते हैं। इस व्यवसाय के लिए तकनीकी ज्ञान और सूझबूझ बहुत जरूरी है।

ध्वनि (ध्वनि और ध्वन्यांकन) इंजीनियर–

ध्वनि और ध्वन्यांकन इंजीनियर प्रोड्यूसर के निर्देशन में काम करते हैं इन इंजीनियरों की पृष्ठ भूमि संगीत की भी हो सकती है और इंजीनियरी की भी। इस क्षेत्र में पूर्णकालिक तकनीकी और व्यवसायिक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं लेकिन अधिकतम साउंड व रिकार्डिग इंजीनियर संगीत में गहरी दिलचस्पी तथा संगीत की पृष्ठ भूमि के कारण इस तकनीकी क्षेत्र में आते हैं। औपचारिक डिग्री के जरिए इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करना कुछ आसान है मगर अच्छे सम्पर्क, मशीनों के संचालन के अनुभव से बिना डिग्री के भी इस क्षेत्र में पहुँचा जा सकता है।

डिस्को जॉकी और वीडियो जॉकी (डीजे/वीजे)–

यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें न तो पहुँचना आसान है और न टिके रहना। वीडियो जॉकी का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जो दर्शकों को आर्कषित कर सके उनका प्रस्तुतीकरण खुद तैयार किया हुआ भी हो सकता है और किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा तैयार सामग्री को भी वे अभ्यास करके बोल सकते हैं। ये दोनों ही कार्य ही आसान नहीं हैं। वे कलाकारों और संगीत से जुड़े लोगों के साक्षात्कार लेते है और उन्हें प्रस्तुत करते हैं। कैमरे के सामने संजीदा बने रहना उनकी बहुत जरूरी आवश्यकता है डिस्को/वीडियो जॉकी का व्यवसाय कड़ी प्रतिस्पर्धा वाला है। श्रोताओं और दर्शकों के लिए संगीत को सही तरीके से प्रस्तुत कर वे संगीत के प्रति भी बड़ा योगदान करते हैं। रेडियो पर संगीत प्रस्तुत करने वाले रेडियो जॉकी को एक निश्चित सूची में से संगीत श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करना होता है। वे रेडियो पर प्रसारित की जाने वाली भेंट वार्ताएं, बातचीत और साक्षात्कार भी प्रस्तुत करते हैं। इस व्यवसाय के लिए स्पष्ट आवाज, तकनीकी कौशल, व्यक्तित्व और मीडिया के क्षेत्रों में अनुभव लाभप्रद हो सकते हैं।

क्लब डिस्को जॉकी संगीत की महफिलों में संगीत को इस तरह प्रस्तुत करते हैं जिससे विभिन्न प्रस्तुतियों के बीच तालमेल बना रहे। वे दर्शकों को आकृष्ट करने के साथ–साथ क्लब के माहौल को हल्का–फुल्का बनाने में योगदान करते हैं जिससे माहौल उत्तेजक बना रहता है और अधिक संख्या में लोग डांस फ्लोर पर थिरकने को आकृष्ट होते हैं।

संगीत पत्रकारिता –

संगीत पत्रकार संगीत–प्रस्तुतियों और रिकार्डिग की समीक्षा करते हैं। संगीत जगत की ताजातरीन खबरें देते हैं। वे

कलाकारों, गायकों, संगीतकारों आदि से साक्षात्कार लेते हैं। ऐसा करते समय वे अपने पत्र–पत्रिका की शैली का ध्यान रखते है। कुछ लोग इस क्षेत्र में शौकिया तौर पर आते हैं मगर बाद में नियमित रूप से यह कार्य करने लगते है। इस व्यवसाय में सफलता के लिए भाषा पर पूरा अधिकार, लगन, पत्रकारिता सम्बन्धी कौशल और संगीत की जानकारी जरूरी है।

संगीत चिकित्सक–

संगीत चिकित्सक ऐसे व्यक्तियों या समूहों कें साथ कार्य करते हैं जिनके लिए शाब्दिक सम्प्रेषण आत्माभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त नहीं है। विकलांगों, मानसिक रोगियों आदि को उनकी सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। उनके साथ गाने–बजाने, खेलने और संगीत सुनने से रोगी व चिकित्सक के बीच एक सम्बन्ध कायम होता है जो चिकित्सा में बड़ा उपयोगी सिद्ध होता ह‌ै इस व्यवसाय के लिए संगीत में डिग्री, संगीत चिकित्सा का व्यवसायिक प्रशिक्षण, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता और उन्हें मदद करने की भावना होना बड़ा जरूरी है।

संगीत अध्यापक–

स्कूलों/कॉलेजों मे पढ़ाने वाले संगीत अध्यापकों को सामान्य रूप से शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त होता है। स्कूलो मे उनका मुख्य कार्य बच्चों में संगीत के प्रति और उत्साह जगाना है। इसके अलावा संगीत स्कूलों में भी संगीत के अध्यापन का कार्य होता है। बहुत से संगीत शिक्षक निजी तौर पर संगीत पढ़ाते है। संगीत अध्यापक बनने के लिए संगीत में योग्यता के अलावा धैर्य और पहल करने की क्षमता का होना भी बहुत जरूरी है।

अन्य व्यवसाय–

पॉप/रॉक संगीत में कलाकारों की वेशभूषा का बड़ा महत्व है। इस उनके परिधान और सज्जा का कार्य स्टाइलिस्ट द्वारा देखा जाता हैं। वे सेट को सजाने का कार्य भी करते है। वीडियो फिल्मों में विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कई टेक्नोलॉजी काम में लायी जाती है, इसके अलावा संगीत के क्षेत्र में वकील, लेखाकार, प्रशासनिक अधिकारियों, टाइपिस्ट, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, तकनीशियन, ग्राफिक डिजाइनर, डान्सर, स्टेज सहायक, फोटोग्राफर, निर्देशक आदि की भी आवश्यकता पड़ती है।

अगर, आप संगीत को व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहते हैं और खास तौर पर अगर आप कलाकार बनना चाहते है तो सम्भावना यही है कि आप अब तक पहला कदम उठा चुके होंगें। यानी आपने बचपन में ही वाद्य यंत्र बजाना सीख लिया होगा या गायन संगीत का प्रारम्भिक प्रशिक्षण ले लिया होगा। आप को इस बात का भी अहसास होगा कि संगीत के क्षेत्र में कितनी जबरदस्त प्रतिस्पर्धा है और आगे बढ़ने के लिए केवल प्रतिभा काफी नहीं है। आपको कड़ी मेहनत भी करनी होगी।

संगीत का व्यवसाय किस तरह चलता है यह जान लेने और अपने चुने व्यवसाय में आवश्यक दक्षता प्राप्त कर लेने के बाद आपको आगे बढ़ने में बड़ी आसानी होगी तेजी से बदल रहे संगीत उद्योग और मनोरंजन की भूखी जनता को देखते हुए आपके पास ढेरों संभावनाएं हैं आप अपनी मेहनत से इनका लाभ उठा सकते हैं संगीत के व्यवसाय में प्रवेश करने के लिए कड़ी मेहनत, लगन और पक्के इरादे की जरूरत है। सफलता का एक मात्र रास्ता है और वह है पूरी तरह समर्पित होकर कार्य करना लेकिन ढुलमुल रवैये वाले और दृढ़ निश्चय न कर पाने वालों के लिए यह उपयुक्त व्यवसाय नहीं है क्योंकि यहां आये दिन बड़ी तेजी से बदलाव होते रहते हैं।

संस्थानों की सूची जहां स्नातक स्तर पर संगीत शिक्षण उपलब्ध है

1. आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम आन्ध्र प्रदेश।
2. नागार्जुन विश्वविद्यालय, नागार्जुन नगर आन्ध्र प्रदेश।
3. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति, आन्ध्र प्रदेश।
4. श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति, चित्तूर, आन्ध्र प्रदेश।
5. आसाम विश्वविद्यालय, सिल्चर आसाम।
6. गुवाहाटी विश्वविद्यालयए गुवाहाटी आसाम।
7. बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार।
8. जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार।
9. ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।
10. महन्त दर्शन दास महिला कालेज, मुजफ्फरपुर ,बिहार।
11. तिलक मांझी भगलपुर विश्वविद्यालय,भागलपुर, बिहार।
12. पंजाब विश्वविद्यालय,चण्डीगढ़।
13. गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
14. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,छत्तीसगढ़।
15. कमला देवी संगीत कालेज,रायपुर छत्तीसगढ़।
16. पं0रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
17. दौलत राम कालेज, दिल्ली।
18. विश्वविद्यालय,आफ दिल्ली।
19. गंधर्व विश्वविद्यालय,नई दिल्ली।
20. करोरीमल कालेज, दिल्ली।
21. मिराण्डा हाउस, दिल्ली।
22. रामजस कालेज, दिल्ली।
23. संगीत निकेतन, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, बल्लीमारान, दिल्ली।
24. गोवा विश्वविद्यालय, गोवा।
25. सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर
26. सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट।

27. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाना।
28. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।
29. हिमाचल विश्वविद्यालय, शिमला।
30. गवर्नमेण्ट कालेज आफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट, श्रीनगर।
31. इन्स्टीट्यूट आफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट, जम्मू।
32. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
33. कश्मीर विश्वविद्यालय, हजरतबल, श्रीनगर।
34. रांची विश्वविद्यालय, रांची।
35. सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, संथाल परगना, दुमका।
36. बिनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग।
37. बंगलौर विश्वविद्यालय, बंगलौर।
38. कालेज आफ फाइन आर्ट्स, आर्ट्स काम्प्लेक्स, बंगलौर।
39. गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा।
40. इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ फाइन आर्ट्स, पैलेस रोड, बंगलौर।
41. कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।
42. रवीन्द्र कालेज आफ फाइन आर्ट्स, तुमकुर।
43. यूनिवर्सिटी कालेज आफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट्स, धारवाड़।
44. मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर।
45. कालीकट विश्वविद्यालय, तेन्हीपालम, मलपुरम, कोझीकोड़।
46. महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम।
47. श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री शंकर पुरम्, कालड़ी।
48. आदर्श कला मन्दिर, ग्वालियर।
49. आदर्श संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, सागर।
50. आनन्द संगीत विद्यालय, धार।
51. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवां।
52. बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल।

53. भारतीय संगीत महाविद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
54. भातखण्डे संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, जबलपुर।
55. छातुर संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर।
56. कालेज आफ फाइन आर्ट्स, इन्दौर।
57. अहिल्या बाई विश्वविद्यालय, इन्दौर।
58. डा0 हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।
59. राजकीय माधव संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, उज्जैन।
60. राजकीय संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, मैहर।
61. राजकीय संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, मन्दसौर।
62. राजकीय संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, नरसिंहगढ़।
63. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
64. ललित कला केन्द्र, ग्वालियर।
65. महारूद्र मण्डल संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर।
66. संगीत विद्यालय, रतलाम।
67. राजेन्द्र कला संगीत महाविद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, बालाघाट।
68. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।
69. साधना संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, भोपाल।
70. शंकर गंधर्व महाविद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
71. श्री कृष्ण संगीत विद्यालय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, इन्दौर।
72. विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।
73. अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती।
74. मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद।
75. नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।

76. उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव।
77. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।
78. तिलक महराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे।
79. स्वामी रामानन्द तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड़।
80. मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल।
81. नागालैण्ड विश्वविद्यालय, कोहिमा।
82. निशामणि स्मारक संस्कृति विद्यालय, पुरी।
83. उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर।
84. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।
85. गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।
86. अजमेर संगीत विद्यालय, अजमेर।
87. वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली।
88. जय नारायन व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।
89. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।
90. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
91. अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई नगर।
92. अविनाशलिंगम इन्स्टीट्यूट फार होम साइंस एण्ड हायर एजूकेशन फार वूमेन, कोयम्बटूर।
93. भतृहरि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर।
94. भरतिदासन विश्वविद्यालय, त्रिचुरापल्ली।
95. राजकीय संगीत विद्यालय, तिरूवलेयारू।
96. मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नै।
97. मदुराई कामराज विश्वविद्यालय, मदुराई।
98. पी.एस.जी. कालेज आफ परफार्मिंग आर्ट्स, कोयम्बटूर।
99. क्वीन मेरीज कालेज, चेन्नै।
100. राजा संस्कृत, तामिल अध्ययन एवं संगीत विद्यालय, तिरूवलेयारू।
101. शीतलक्ष्मी रैमजे विद्यालय, त्रिची।
102. SRILASRI KASIVASI SWAMINATH SWAMINGAL KALLOORI, तिरूपण्डल।
103. श्री सतगुरू संगीत विद्यालयम्, मदुराई।
104. त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला।
105. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

106. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
107. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी।
108. चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
109. कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर।
110. दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा।
111. दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
112. डा0 भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा।
113. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
114. महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
115. रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
116. पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
117. भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ।
118. गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
119. गढ़वाल विश्वविद्यालय, गढ़वाल।
120. कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल।
121. बंगाल संगीत विद्यालय, कोलकाता।
122. बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान।
123. कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता।
124. रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता।
125. विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर।
126. विश्व भारती, शान्तिनिकेतन (वीरभूमि)।

संस्थानों की सूची जहां स्नातकोत्तर स्तर पर संगीत शिक्षण उपलब्ध है

1. आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर, विशाखापटनम।
2. पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
3. श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम, तिरूपति।
4. बी0एन0 मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार।
5. ललित नरायन मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
6. तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।
7. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।
8. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, राजनन्दगांव।
9. कमलादेवी संगीत विद्यालय, रायपुर।
10. श्री राम संगीत कालेज, रायपुर।
11. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
12. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा।
13. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा।
14. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, कांगड़ा।
15. बंगलौर विश्वविद्यालय, बंगलौर।
16. यूनिवर्सिटी आफ कालेज आफ फाइन आर्ट्स फार वूमेन, मैसूर।
17. काकातीया विश्वविद्यालय, वारंगल।
18. मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर।
19. केरल विश्वविद्यालय, तिरूवननन्तपुरम्।
20. महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम।
21. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवां।
22. बरकत उल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल।
23. भारतीय संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर।
24. भातखण्डे संगीत विद्यालय, जबलपुर।
25. अहिल्या देवी विश्वविद्यालय, इन्दौर।
26. राजकीय माधव संगीत विद्यालय, ग्वालियर।
27. राजकीय माधव संगीत विद्यालय, उज्जैन।

28. राजकीय संगीत विद्यालय, इन्दौर।
29. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
30. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।
31. शंकर गंधर्व महाविद्यालय, ग्वालियर।
32. श्रीकृष्ण संगीत विद्यालय, इन्दौर।
33. श्री महारूद्र मण्डल संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर।
34. विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।
35. डा0 बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद।
36. स्वामी रामानन्द तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़।
37. नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।
38. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।
39. श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम्, तिरूपति।
40. श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई।
41. कला विकास केन्द्र, कटक।
42. उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर।
43. राजकीय महिला विद्यालय, चण्डीगढ़।
44. गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर।
45. कन्या महाविद्यालय, जलन्धर।
46. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।
47. वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।
48. जय नरायन व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।
49. अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई नगर।
50. भतृहरि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर।
51. भरतीदासन विश्वविद्यालय, त्रिचुरापल्ली।
52. मदर टेरेसा महिला विश्वविद्यालय, कोडैकनाल।
53. संगीत विद्यालय, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला।
54. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
55. मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।
56. कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर।
57. आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
58. दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा।

59. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी।
60. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
61. भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ।
62. रवीन्द्र सांस्कृतिक केन्द्र, विकास नगर, लखनऊ।
63. विश्वभारती, शान्तिनिकेतन।

संगीत में डिप्लोमा प्रदान करने वाले संस्थान

1. Academy De Musical, पणजी, गोवा।
2. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
3. आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम।
4. Arts & Fine Arts, कोलकाता।
5. आर्य संगीत विद्यापीठ, कोलकाता।
6. अविनाशलिंगम महिला होम साइंस तथा उच्चशिक्षा संस्थान, कोयम्बटूर।
7. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
8. बरकत उल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल।
9. भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर, गुजरात।
10. मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नै।
11. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
12. धर्म समाज कालेज अलीगढ़।
13. दुर्गापुर संगीत विद्यालय, दुर्गापुर।
14. गुवाहाटी संगीत विद्यालय, गुवाहाटी।
15. गीता बिटान शिक्षायतन, कोलकाता।
16. राजकीय कला विद्यालय, शिमला।
17. राजकीय संगीत विद्यालय, मन्दसौर।
18. राजकीय संगीत एवं नृत्य विद्यालय, भुवनेश्वर।
19. राजकीय संगीत एवं नृत्य विद्यालय, विजयवाड़ा।
20. गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद।
21. हृषिकेश संगीत विद्यालय, नाडिया।
22. भारतीय कला एवं संस्कृति संस्थान, कोलकाता।
23. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।
24. जादवपुर संगीत विद्यालय, कोलकाता।
25. जोती सिंह महिला मन्दिर, अहमदाबाद।
26. कला केन्द्र, भागलपुर।
27. KALAI KAVIRI COLLEGE OF FINE ARTS, त्रिचुरापल्ली।
28. कलाक्षेत्र, अडयार, चेन्नै।
29. केरल कलामण्डलम्, Cheruthuruthy.

30. कला विकास केन्द्र, कटक।
31. एम.आर. राजकीय संगीत विद्यालय, विजीनगरम।
32. महाराज सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा।
33. मीरा संगीत विद्यालय, कोलकाता।
34. मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
35. मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर।
36. यूनिवर्सिटी कालेज आफ फाइन आर्ट्स फार वूमेन, मैसूर।
37. संगीत अकादमी, पालघाट।
38. एन.एस.जेड. कालेज आफ म्यूजिक एण्ड डांस, नरसापुर।
39. नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर।
40. नरेन्द्र संगीत महाविद्यालय, नाडिया।
41. नृत्यम्, हावड़ा।
42. पटना विश्वविद्यालय, पटना।
43. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।
44. सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर।
45. सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट।
46. SHRBITAM, जलपाईगुड़ी।
47. शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
48. श्रीमती नाथी बाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई।
49. श्री कृष्णदेव आर्य विश्वविद्यालय, अनन्तपुर।
50. श्री आर.के. संगीत महाविद्यालय, बीरभूम (प0बंगाल)
51. तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।
52. उत्कल संगीत एवं नृत्य विद्यालय, कटक।
53. वाद्य मध्यमा संगीत विद्यालय, अल्मोड़ा।
54. विद्या कला मन्दिर, पटना।
55. विश्व भारती, शान्तिनिकेतन।
56. महिला प्रशिक्षण विद्यालय, दयालबाग, आगरा।

संगीत में प्रमाणपत्र प्रदान करने वाले संस्थान

1. अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई नगर।
2. भातखण्डे संगीत विद्यालय, नई दिल्ली।
3. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
4. राजकीय संगीत एवं नृत्य विद्यालय, सिकन्दराबाद।
5. राजकीय संगीत एवं नृत्य विद्यालय, विजयवाड़ा।
6. राजकीय संगीत विद्यालय, ग्वालियर।
7. ऋषिकेश संगीत विद्यालय, नाडिया।
8. कला केन्द्र, भागलपुर।
9. कमास देवी संगीत महाविद्यालय, रायपुर।
10. कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।
11. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
12. ललिता कलालयम्, पो0 नेलुविया, त्रिचूर।
13. एम.आर. राजकीय संगीत विद्यालय, विजीनगरम्।
14. मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
15. पटना विश्वविद्यालय, पटना।
16. रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता।
17. एस.एम.आर.के. महिला महाविद्यालय, नासिक।
18. एस.आर.वी. संगीत विद्यालय, त्रिचूर।
19. साजा बा गर्ल्स हाई स्कूल, जामनगर।
20. संगीत एवं नृत्य विद्यालय, सिकन्दराबाद।
21. श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम्, तिरूपति।
22. विश्व भारती, शान्ति निकेतन।
23. डब्लू.के. भगिनी सेवा मण्डल महिला कला एवं वाणिज्य विद्यालय, धुले, महराष्ट्र।

नृत्य के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं रोजगार

भारत में नृत्य की 2000 साल की अविच्छिन्न परम्परा रही है। नृत्य की कथावस्तु पौराणिक ग्रन्थों, लोक गाथाओं, किंवदन्तियों और प्राचीन उत्कृष्ट साहित्य से प्राप्त होती है। हमारे देश में जहां कई सुप्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य हैं तो लोकनृत्यों की भी कोई कमी नहीं हैं। ये नृत्य विधाएं देश के किसी न किसी भाग की विशिष्टताएं हैं और जिस क्षेत्र में ये प्रचलित हैं वहां की मिट्‌टी की महक इनमें समाई हुई है।

शास्त्रीय नृत्य विधाएं प्राचीन नृत्य शैलियों पर आधारित हैं और इनके प्रस्तुतीकरण के बड़े कड़े नियम हैं। रंगमंच पर प्रस्तुत की जाने वाली सबसे लोकप्रिय नृत्य शैलियों में तमिलनाडु का भरतनाट्‌यम नृत्य, उड़ीसा का ओडिसी, केरल का कथकली, आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी, भारतीय संस्कृति पर मुगल शैली के असर से नये रुप में उभरा कथक नृत्य और मणिपुर का कोमल शैली पर आधरित गीत नृत्य मणिपुरी प्रमुख हैं। इनके अलावा परम्परागत नृत्यों की कई अन्य शैलियां है जो अर्ध शास्त्रीय, लोक, नृत्य नाट्‌य और युद्ध कौशल पर आधरित हैं। इनसे भारत में नृत्य का परिदृश्य और समृद्ध हुआ है। शास्त्रीय और लोक नृत्यों, दोनों ही की वर्तमान लोकप्रियता का कारण संगीत नाटक अकादमी और अन्य प्रशिक्षण संस्थाएं तथा सांस्कृतिक संगठन हैं।

नर्तक कई तरह की पृष्ठभूमियों में विभिन्न प्रकार के नृत्य, जैसे नृत्य नाटिका, नृत्य पर आधारित संगीतमय कार्यक्रम, फिल्मी नृत्य, टेलीविजन पर नृत्य के कार्यक्रम, और संगीत के वीडियों और विज्ञापनों के लिए नृत्य आदि कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। वे हर दिन थोड़ा बहुत समय नृत्य के अभ्यास में भी व्यतीत करते है। वे रियाज में शामिल

होते हैं और नृत्य प्रस्तुतियां देते हैं। मंच के एक कलाकार की जिन्दगी में ऐसी शायद ही कोई गतिविधि होती हैं जिसका सीधा संबध नृत्य से न हो। कलाकारों को अपने कला स्तर में लगातार सुधार करना पड़ता है। उन्हें अपने प्रदर्शन में नवीनता लानी पड़ती है और अपने दर्शकों की रुचियों का भी खयाल रखना पड़ता है। उन्हें अपनी कला के प्रदर्शन के लिए जगह–जगह जाकर प्रस्तुतियां दिखानी पड़ती है। मंच के कई कलाकार अपने स्कूल या संस्थाएं भी चलाते हैं जिनमें वे अपना वक्त नृत्य के विद्यार्थियों को सिखाने में बिताते हैं। कई नर्तक अपनी नृत्य मंडलियां भी बना लेते हैं और अपने शिष्यों की सहायता से नृत्य मंडलियां भी बना लेते है और अपने शिष्यों की सहायता से नृत्य नाटिकाओं या बैले के रुप में सामूहिक प्रस्तुतियों के लिए व्यवस्था/कार्यक्रम बनाने पड़ते हैं। इसी तरह उन्हें नृत्य की रिहर्सल करनी पड़ती है और वाद्य संगीतकारों तथा गायकों के साथ अभ्यास करना पड़ता है। ये सारे काम उन्हें या तो स्वयं या फिर एजेंटों के जरिए करने होते है। इसमें तालमेल और समन्वय बनाने की आवश्यकता पड़ती है और बहुत ही व्यावहारिक बनना पड़ता है। नर्तक औपचारिक स्कूलों और कालेजों में शिक्षण–प्रशिक्षण का कार्य भी करते है। इन संस्थाओं में नृत्य शैक्षिक पाठ्यक्रम का हिस्सा होता है। अगर विश्वविद्यालय स्तर पर नृत्य सिखाया जाता है तो नृत्य के प्राध्यापकों को सैद्धांतिक पहलुओं के बारे में भी पढ़ाना पड़ता है। व्यावसायिक स्कूलों में नृत्य शिक्षकों को प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पहचान करनी पड़ती है। इसका उद्देश्य व्यावसायिक नर्तक तैयार करना होता है।

व्यक्तित्व संबंधी विशेषताएं :–

मंच पर प्रस्तुतियां देने वाले कलाकारों के लिए मंच पर प्रस्तुत करने योग्य आकर्षक व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, भावनात्मक गहराई, मजबूत कद काठी, स्वाभाव में लचीलापन, चौकन्नापन, समन्वय, गरिमा, पूर्ण समर्पण, रचनाशीलता, बहुविज्ञता, लय की जानकारी और नाटक व नृत्य की समझ

होना बहुत उपयोगी होता है। नृत्य प्रस्तुतियां देने वालों में आलोचनाओं को बिना नाराजगी के सुन सकने की क्षमता होनी चाहिए। अभिव्यक्ति की क्षमता महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय नृत्य किसी विषयवस्तु को मंचित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इसमें उसे गीत, आंगिक क्रियाओं और चेहरे के हाव–भाव से मदद मिलती है। ये सब चीजें संगीत के साथ मिलकर नृत्य की **'भाषा'** ' का निर्माण करती है। यही वजह है कि सफल नर्तक के लिए न केवल नृत्य के तकनीकी पहलुओं में सिद्धहस्त होना जरुरी है बल्कि उसे उपयुक्त आंगिक मुद्राओं और चेहरे के हाव –भाव का भी प्रदर्शन करना पड़ता है, तभी बिना किसी बनावटीपन के सही मनःस्थिति का मंचन हो पाता है।

नृत्य सिखाने के लिए नृत्य शिक्षक की प्रत्येक उम्र के लोगों में दिलचस्पी होना आवश्यक है। इसके अलावा उसमें सूझबूझ, असीम धैर्य, अपनी बात को शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता और नृत्य के पद संचालन को प्रदर्शित करके दिखाने की योग्यता होनी चाहिए। लय की अच्छी जानकारी, संगीत में निपुणता, आकर्षक व्यक्तित्व, ललित पद संचालन, मित्रतापूर्ण व आत्मविश्वास से भरे तौर–तरीके, ऊर्जा और उत्साह का होना भी अत्यन्त आवश्यक है। कोरियोग्राफी या नृत्य रचना या बैले प्रस्तुतीकरण और संयोजन की कला है। जिन नर्तकों के पास विलक्षण कल्पनाशक्ति होती है और जो नृत्य कला के संदर्भ में संगीत की व्याख्या कर सकते है, वे बाद में कोरियोग्राफी के क्षेत्र में जा सकते हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षणः–

नृत्य में पारंगत होने के लिए बचपन से ही गंभीरतापूर्वक नृत्य का प्रशिक्षण शुरु कर देना चाहिए। यह दस साल की उम्र से पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ शुरु किया जा

सकता है। विधिवत पूर्णकालिक प्रशिक्षण दसवीं के बाद शुरु की जा सकती है। तब स्कूल के दौरान प्राप्त प्रारंभिक प्रशिक्षण अच्छी पृष्ठभूमि बन जाता है। नृत्य कलाकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों तरह की बातें शामिल रहती है। विद्यार्थियों को संगीत, लय, ताल, वाद्य यंत्रों, नृत्य शैलियों, नृत्य के उद्भव और इतिहास और जिस नृत्य के उद्भव और इतिहास और जिस नृत्य शैली का प्रशिक्षण लिया जा रहा है उसकी विशेषताओं के बारे में जानकारी दी जाती है। व्यावसायिक नृत्य प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम काफी विस्तृत होते है और उनके अतंर्गत निष्पादन कला के रुप में नृत्य के तमाम पहलुओं को शमिल किया जाता है ताकि जो लोग इसे व्यवसाय या अध्यापन के रुप में अपनाना चाहते है उनकी आवश्यकताएं पूरी हो सकें।

नृत्य में व्यावसायिक डिग्री या डिप्लोमा या किसी व्यावसायिक नृत्य विद्यालय/संस्थान से डिप्लोमा /डिग्री पाठ्यक्रम में नृत्य के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी जाती है। इस तरह का डिप्लोमा या डिग्री कालेज/विश्वविद्यालय या व्यावसायिक नृत्य विद्यालय में अध्यापन के लिए भी आवश्यक होता है।

प्रमुख संस्थान

1. **कथक केन्द्र**, बहावलपुर हाउस, भगवान दास रोड, नई दिल्ली– 110001 इसकी स्थापना 1964 में हुई थी और यह देश में नृत्य का प्रशिक्षण देने वाला प्रमुख संस्थान है। इसमें 9–14 वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए चार साल का अंशकालिक आधार पाठ्यक्रम (फाउन्डेशन कोर्स) उपलब्ध है।

13–22 वर्ष तक के आयु वर्ग के लिए तीन साल का आंशकालिक डिप्लोमा(पास) कोर्स ।

19–26 वर्ष तक के आयुवर्ग के लिए 2 साल का पोस्ट कोर्स ।

डिप्लोमा (ऑनर्स) पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 2 साल का विधिवत प्रारंभिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।

2. **जवाहरलाल नेहरु मणिपुरी नृत्य अकादमी**, इम्फाल,मणिपुर–7900501 ।

यह देश में मणिपुरी नृत्य का प्रशिक्षण देने वाली प्रमुख संस्था है। इसमें पाठ्यक्रम इस तरह से बनाए गए हैं जिससे व्यावसायिक कलाकार के लिए अच्छी पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है।

10–14 वर्ष के आयुवर्ग के विद्यार्थियों के लिए 3 साल का फाउंडेशन कोर्स। 3 साल का पोस्ट डिप्लोमा कोर्स।

3. **कलाक्षेत्र फाउंडेशन, रुक्मिणीदेवी ललित कला महाविद्यालय** तिरुवनमियूर, चेन्नई–600041(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)

भारत नाट्यम में डिप्लोमा कोर्सः– पात्रता –दसवीं कक्षा पास और 20 वर्ष से कम आयु इसमें प्रवेश दक्षता परीक्षा/ साक्षात्कार में वरीयता के आधार पर होता है।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करनेके बाद में वर्ष काय पोस्ट डिप्लोमा नाट्य इंस्टीट्यूट ऑफ कथक एंड कोरिओग्राफी में 3 साल का बी0ए0 डिग्री पाठ्यक्रम (बंगलौर विश्वविद्यालय से संबद्ध), कोरिओग्राफी में एक साल का स्नातकोत्तर डिप्लोमा

4. **कथक फाउंडेशन** :– कथक में एक साल का स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

5. **विश्व भारती संगीत भवन** (भारतीय संगीत और नृत्य संस्थान), पो0 शंतिनिकेतन –731235
चार वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम जिसमें मणिपुरी नृत्य/कथकली नृत्य के विकल्प उपलब्ध हैं।

6. **रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय**, एमरैल्ड बोवर कैम्पस, 56/ए,बी टी रोड, कोलकाता–700050
नृत्य में डिप्लोमा कथकली/ मणिपुरी में प्रमाणपत्र और डिप्लोमा धारकों के लिए दो–वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम।

नृत्य में बी0ए0 ऑनर्स/एम0ए0

1. **इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय** खैरागढ़ –491881

इण्टर (+2)के बाद कथक और भरतनाट्यम : प्रथमा, मध्यमा, विद, विविद, बी0 डांस, एम0 डांस नृत्य में तीन साल का डिप्लोमा (कथक, छऊ और ओडिसी)

2. **स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स, पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय**, ललितकला क्षेत्रम, सरुबाग, पब्लिक गार्डन्स, नामपल्ली, हैदराबाद–500004

बी0ए0 कुचिपुड़ी नृत्य, एम0ए0 कुचिपुड़ी नृत्य।

3. **नालन्दा नृत्य अनुसंधान केन्द्र**, नालन्दा नृत्य कला महाविद्यालय (मुम्बई विश्वविद्यालय) 'साई प्लाट' ए–7/1, एन. एस.रोड नं0–10, जे.वी.पी.डी. स्कीम, विले पार्ले (पश्चिम) मुम्बई–400004

सांन्ध्य कालीन पाठ्यक्रम सात वर्ष के हैं और इनमें चार साल बाद **'प्रारम्भिक'** एवं सात साल बाद **'कोविद'** प्रमाणपत्र दिये जाते हैं। ये पाठ्यक्रम ऐसे वच्चों और विश्वविद्यालय से पहले की शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों के लिये हैं जिन्होनं नृत्य पाठ्यक्रम पूरे कर लिये हैं तथा जिन्हे अभ्यास और उच्च प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

एस.एस.सी.(दसवीं कक्षा) परीक्षा पास करने के बाद विद्यार्थी कालेज में ललित कला (नृत्य) में पांच साल के स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम (एफ.बी.ए.) में दाखिला ले सकते हैं। इसके बाद दो साल का मास्टर आफ फाइन आर्ट (डांस) पाठ्यक्रम और उसके बाद नृत्य में पी.एच.डी. की जा सकती है।

नृत्य शैलियां – भरत नाट्यम,मोहिनी अट्टम और कथकली।

4. **श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय,** श्री शंकरपुरम्, पो0– कलाड़ी –683574

नृत्य में आधारिक पाठ्यक्रम– एस.एस.एल.सी/ समकक्ष परीक्षा पास करने के बाद दो वर्ष का पाठ्यक्रम तथा प्री–डिग्री या समकक्ष परीक्षा के बाद नृत्य में बी.ए. 3 वर्ष का पाठ्यक्रम।

5. **वनस्थली विद्यापीठ**, पो0 – वनस्थली, राजस्थान –304022

प्रमाणपत्र (मध्यमा), डिप्लोमा (उत्तमा), बी. म्यूज. (नृत्य) तथा एम. म्यूज.(नृत्य)।

6. **अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय**, मंडल, गंधर्व निकेतन, ब्राह्मणपुरी, मिराज, जिला– सांगली ।

पाठ्यक्रम– कथक, भरत नाट्यम और ओडिसी।

7. **श्री राम भारतीय कला केन्द्र,** संगीत एवं नृत्य महाविद्यालय, 1, कापरनिकस मार्ग, नई दिल्ली –110001

नृत्य में प्रिपरेटरी, डिप्लोमा और पोस्ट डिप्लोमा (कथक, छऊ, भरत नाट्यम और ओडिसी)

संस्थाओं की यह सूची सम्पूर्ण नही है। इनके अतिरिक्त भी बहुत सी संस्थायें नृत्य में प्रशिक्षण उपलब्ध कराती हैं।

सम्भावनाएं

ऐसे बहुत कम कलाकार होते हैं जो लगातार और सदा सफल रहते हैं। जब तक कोई नृत्य कलाकार पूरी तरह स्थापित नहीं हो जाता उसे नृत्य से बहुत अच्छी आय नहीं हो पाती। केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण से सफलता सुनिश्चित नहीं हो जाती । इसके लिए प्रतिभा के साथ–साथ लगन के साथ काम करना होता है। इसके अलावा सही सम्पर्क होने भी बहुत जरुरी हैं क्योंकि इनके बिना नाम कमाना आसान नहीं है। जितना अधिक कोई कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करता हैं और यात्राएं करता है, उतनी ही अधिक उसकी ख्याति फैलती है।

नृत्य कलाकारों का व्यावसायिक जीवन बहुत लम्बा नही होता। इसीलिए बहुत से नृत्य कलाकार अंशकालिक आधार पर अध्यापन का काम भी करते हैं और बाद में पूर्णकालिक अध्यापक हो जाते है। आज लोगों में नृत्य के प्रति रुचि बढ़ रही है और बहुत से माता–पिता अपने बच्चे को नृत्य सिखाना चाहते है। किसी आवासीय क्षेत्र के आस–पास नृत्य विद्यालय के चलने की अच्छी संभावनाएं रहती है। आजकल स्कूल भी सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालन के लिए पूर्णकालिक आधार पर नृत्य अध्यापक रखना चाहते है। इन अध्यापकों पर बच्चों को संगठित करने और उन्हें स्कूलों की सांस्कृतिक स्पर्धाओं के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी रहती है। व्यावसायिक स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पूर्णकालिक और अंशकालिक, दोनों ही आधार पर रोजगार की संभावनाएं है। स्कूल और कॉलेजों में नौकरियां तो पक्की होती हैं लेकिन

अर्थलाभ कोई खास नहीं होता। लेकिन निजी तौर पर प्रशिक्षण देकर अच्छी आमदनी की जा सकती है।

नृत्य के क्षेत्र में संभावनाएं लागातार बढ़ रही है। जैसे–जैसे रंगमंच और टेलीविजन कार्यक्रमों में बढ़ोत्तरी हो रही है, वैसे–वैसे नृत्य कलाकारों के लिए संभावनाए भी बढ़ती जा रही है। फिल्म की सदाबहार दुनिया में तो नृत्य कलाकारों के लिए सदैव संभावनाओं की कोई कमी नही रही है।

संस्थान जहां स्नातक स्तर पर नृत्य विषय उपलब्ध है

1. आन्ध्र विश्वविद्यालय, कला संकाय, वाल्टेयर, विशाखापटनम।
2. बैंगलोर विश्वविद्यालय, ज्ञान भारती, बैंगलोर, कर्नाटक।
3. बरकत उल्लाह विश्वविद्यालय, होशंगाबाद रोड, भोपाल।
4. कालेज आफ फाइन आर्टस, इन्दिरा संगीत महाविद्यालय, ए0बी0 रोड, राजेन्द्र नगर, इन्दौर।
5. गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, अमृतसर, पंजाब।
6. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, राजनन्दगांव (छत्तीसगढ़)।
7. जीवाजी विश्वविद्यालय, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, विद्या विहार, ग्वालियर।
8. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा।
9. मणिपुर विश्वविद्यालय,मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यालय, कांचीपुर, इम्फाल।
10. मुम्बई विश्वविद्यालय, कला संकाय,एम0जी0 रोड, फोर्ट, मुम्बई।
11. मैसूर विश्वविद्यालय, क्राफोर्ड हाल, मैसूर, कर्नाटक।
12. नालन्दा नृत्य कला महाविद्यालय, मुम्बई विश्वविद्यालय, विले पार्ले (पश्चिम), मुम्बई।
13. पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, स्कूल आफ फाइन आर्टस, ललितकला क्षेत्रम्, सरूबाग पब्लिक गार्डेन्स, नामपल्ली, हैदराबाद।
14. पंजाब विश्वविद्यालय, कला संकाय, सेक्टर–14, चण्डीगढ़।
15. पंजाबी विश्वविद्यालय, कला एवं समाज विज्ञान संकाय, पटियाला।

16. रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, ललित कला संकाय, एमराल्ड बॉवर कैम्पस, 56/ए, बी0टी0 रोड, कोलकाता।
17. रवीन्द्र सांस्कृतिक केन्द्र, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 1/1198, विकास नगर, कुर्सी रोड, लखनऊ।
18. सम्बलपुर विश्वविद्यालय, कला संकाय, ज्योति विहार, बर्ला, सम्बलपुर।
19. श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, पो0– कालड़ी, एर्नाकुलम्–683574 (केरल)।
20. तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, विद्यापीठ भवन, गुलटेकड़ी, पुणे।

संस्थान जहां स्नातकोत्तर स्तर पर नृत्य विषय उपलब्ध है

1. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, राजनन्दगांव (छत्तीसगढ़)।
2. मुम्बई विश्वविद्यालय, एम0जी0 रोड, फोर्ट, मुम्बई।
3. नागपुर विश्वविद्यालय, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, रवीन्द्र नाथ टैगोर मार्ग, नागपुर– 440001
4. नालन्दा नृत्य कला महाविद्यालय, मुम्बई विश्वविद्यालय, विले पार्ले (पश्चिम), मुम्बई।
5. पंजाब विश्वविद्यालय, कला संकाय, सेक्टर–14, चण्डीगढ़।

संस्थान जहां डिप्लोमा स्तर पर नृत्य विषय उपलब्ध है

1. अविनाश लिंगम इन्स्टीट्यूट फार होम साइंस एण्ड हायर एजूकेशन फार वूमेन, कोयम्बटूर – नृत्य में डिप्लोमा।
2. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, फैकल्टी आफ परफार्मिंग आर्टस, वाराणसी – बांसुरी तथा नृत्य (कथक एवं भरतनाट्यम) में तीन वर्षीय डिप्लोमा।
3. भावनगर विश्वविद्यालय, गौरीशंकर लेक रोड, भाव नगर, गुजरात – नृत्य में डिप्लोमा।
4. बरकत उल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल – नृत्य में डिप्लोमा।
5. राजकीय कला विद्यालय, शिमला – नृत्य में डिप्लोमा।
6. गुजरात विश्वविद्यालय, नवरंग पुरा, अहमदाबाद – नृत्य में तीन वर्षीय डिप्लोमा।
7. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, राजनन्दगांव,– कथक, छाऊ एवं ओडिसी नृत्य में तीन वर्षीय डिप्लोमा।
8. इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ आर्ट एण्ड कल्चर, कोलकाता – नृत्य में जूनियर डिप्लोमा।
9. केरल कलामण्डलम्, Villathol Nagar] Cheruthuruthy (Kerala)- नृत्य में 4 से 6 वर्षीय डिप्लोमा।
10. रनघाट कला केन्द्र, नाडिया (पश्चिम बंगाल) – नृत्य में जूनियर डिप्लोमा।
11. महाराज सयाजी राव बड़ौदा विश्वविद्यालय, दुर्ग प्रयोगशाला के सामने, शास्त्री पुल रोड, फतेहगंज, वड़ोदरा – नृत्य में 5 वर्षीय डिप्लोमा।
12. मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, कर्नाटक – नृत्य में दो वर्षीय डिप्लोमा।
13. रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता – नृत्य एवं ड्रामा में 2 वर्षीय जूनियर डिप्लोमा तथा नृत्य एवं ड्रामा में 3 वर्षीय सीनियर डिप्लोमा।

14. राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर–नृत्य में डिप्लोमा।
15. शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र – कथक एवं भरतनाट्यम शास्त्रीय नृत्य में दो वर्षीय डिप्लोमा।
16. श्री आर0के0 संगीत महाविद्यालय, बीरभूम, पश्चिम बंगाल – नृत्य में जूनियर डिप्लोमा।
17. तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, कला संकाय, भागलपुर – नृत्य में चार वर्षीय डिप्लोमा।
18. विद्या कला मन्दिर, पटना, बिहार –नृत्य में डिप्लोमा।
19. विश्व भारती, शान्ति निकेतन, बीरभूम, पश्चिम बंगाल – कथकली एवं मणिपुरी नृत्य में चार वर्षीय डिप्लोमा।

संस्थान जहां प्रमाणपत्र स्तर पर नृत्य विषय उपलब्ध है

1. वनस्थली विद्यापीठ, पो0 वनस्थली, राजस्थान –नृत्य में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र।
2. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा – कथक में एक वर्षीय प्रमाण पत्र।
3. नाट्य तरंगिणी, डी–II/57, काका नगर, नई दिल्ली – कुचिपुड़ी नृत्य एवं कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षण– सम्पर्क पद्मश्री राजा राधा रेड्डी ।
4. विश्व भारती, शान्ति निकेतन, बीरभूम, पश्चिम बंगाल –नृत्य में दो वर्षीय पार्ट टाइम प्रमाणपत्र प्रशिक्षण।

संगीत एवं नृत्य के पत्राचार पाठ्यक्रम

1. HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY, International Centre for Distance Education and Open Learning, Summer Hill, Simla-171005, offers B.A. (pass) courses in Music (Vocal & Instrumental).
Eligibility : 10+2
Duration : 3 years.

2. UNIVERSITY OF MADRAS, Institute of Correspondence Education, Chepak, Chennai- 600005, offers courses in Indian Music.
Eligibility : 10+2
Duration : 3 years.

3. PANJAB UNIVERSITY, Department of Correspondence Studies, Chandigarh 160014 offers BA course in Indian Classical Dance.
Eligibility : 10+2
Duration : 3 years.

4. S N D T WOMEN'S UNIVERSITY, Centre for Distance Education, Sir Vithaldas Vidyavihar, Juhu Road, Santacruz (west), Mumbai 400049 offers MA courses in Music.
Eligibility : Bachelor's degree.
Duration : 2 years.